IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 27, Issue 2, Series 1 (February, 2022) 71-78
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

अलवर जिले में सामाजिक एवं आर्थिक विकास में परिवर्तन एक भौगोलिक अध्ययन

निकिता गुप्ता,
शोधार्थी, भूगोल विभाग, राजऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय , अलवर (राज.) 301001

शोध सारांश
सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया आज भी गतिशील है। आर्थिक विकास होने से प्रति व्यक्ति जीवन स्तर ऊपर उठता है, जिससे समाज समृद्ध होता है। जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक, सांस्कृतिक एवं संस्थागत परिवर्तन होते हैं। यह क्षेत्र विशेष की मानवीय क्रियाओं एवं अधिवासों में उपलब्ध आवश्यक सुविधाओं के स्थानिक वितरण प्रतिरूप से निर्धारित होता है। समाज गतिशील है और समय के साथ परिवर्तन अवश्यंभावी है। आधुनिक संसार में प्रत्येक क्षेत्र में विकास हुआ है तथा विभिन्न समाजों ने अपने–अपने तरीके से इन विकास के आयामों को समाहित किया है। सामाजिक परिवर्तन के अर्न्तगत समाज की संरचना वर्ग प्रस्थिति, खान–पान, रीति रिवाज, पहनावा, शैक्षणिक सह शैक्षणिक जीवन स्तर आदि में बदलाव सम्भावित परिवर्तन में आते हैं। मैकाइवर एवं पेज ने अपनी पुस्तक सोसायटी ँवबपमजल) (अपने तीसरे संस्करण जून 1970) में सामाजिक परिवर्तन को स्पष्ट करते हुए बताया कि "समाजशास्त्री होने के नाते हमारा प्रत्यक्ष सम्बन्ध सामाजिक संबंधों से है और उसमें आए हुए परिवर्तन को हम सामाजिक परिवर्तन कहेंगे।" सामाजिक विकास के अध्ययन में सामाजिक विषमता का उल्लेख करना भी अनिवार्य है।

मुख्य बिन्दु :– विकास की संकल्पना , सामाजिक परिवर्तन की विशेषता , समग्र विकास , आर्थिक विकास , मानव संसाधन , प्रथाएं , आर्थिक व सामाजिक परिवर्तन एवं निष्कर्ष ।

परिचय :–

सामाजिक एवं आर्थिक विकास एक विस्तृत संकल्पना है, जो किसी इकाई क्षेत्र में उत्पादन एवं उपभोक्ता तक सीमित नहीं है, अपितु संसाधनों के न्याय संगत वितरण एवं जीवन की गुणवत्ता से जुड़ी हुई है। सामाजिक सुविधाओं का विकास ग्रामीण लोगों के आर्थिक व सामाजिक जीवन में सुधार करता है, क्योंकि देश की 76.16 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। समाजशास्त्र में सामाजिक विकास को मानव के आपसी सम्बन्धों के विकास के रूप में परिभाषित किया है। व्यावहारिक रूप में प्रादेशिक विकास सामाजिक विकास के मापन की उपयुक्त विधियों में से एक है। प्रादेशिक विकास के तत्त्वों में स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन, संचार, विद्युत आपूर्ति इत्यादि शामिल हैं। ये तत्त्व सामाजिक व्यवस्था के कार्यों की किस्म, आर्थिक कल्याण की क्षमता नीति के बारे में विचार और व्यक्तियों के व्यवहार के तरीके के रूप में प्रतिबिम्बित होते हैं। संकल्पना की दृष्टि से विकास को परिवर्तन के रूप में परिभाषित किया गया है, जो उपलब्ध परिस्थितियों में अच्छी स्थिति प्राप्त करने के लिए किया जाता है, यह परिवर्तन ही विकास की मूल संकल्पना है। विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों एवं संस्थागत उपायों के अतिरिक्त एक इकाई क्षेत्र में एक स्वतः स्फूर्त आर्थिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में विकास का स्तर सतत् बने रहने की अवधारणा निहित है। मात्रात्मक पहलुओं के साथ ही गुणात्मक पहलू जैसे मानव संसाधन विकास का स्तर विकास के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण एवं सामाजिक भागीदारी एवं सामाजिक सुगमता, आर्थिक विकास के प्रमुख पक्ष हैं।

पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी इसी इकाई क्षेत्र के प्राकृतिक पक्ष है। पर्यावरण की अक्षमता एवं न्यूनतम ह्रास के स्तर पर संसाधनों का वैज्ञानिक प्रबन्धन तथा विकास में उसके दीर्घकालिक उपयोग को पर्यावरण संरक्षण की संज्ञा दी जाती है। पर्यावरण संरक्षण एक गत्यात्मक संकल्पना है, जिसमें एक तरफ पर्यावरण दिया जाता है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक, आर्थिक विकास पर आगत (प्दचनज) के रूप में सम्मिलित किया जाता है।

अलवर जिले की 76 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है। स्वतन्त्रता के पश्चात् कृषि, उद्योग, व्यापार, पशुपालन, वनीकरण, शिक्षा, स्वरोजगार, सामाजिक सेवाओं और सामाजिक, आर्थिक जीवन में परिवर्तन हुआ है। इस क्षेत्र के धरातल, जलवायु मिट्टियाँ, जल संसाधन, खनिज संसाधन आदि में अनेक विषमतायें मिलती हैं। अतः अलवर के सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरण में भी अनेक विषमतायें विद्यमान हैं। भौगोलिक विशेषताओं के अनुसार अलवर, पहाड़ी के अलग–अलग भागों में सामाजिक, आर्थिक विकास या परिवर्तन की गति भी भिन्न–भिन्न रही है। अलवर पहाड़ी के ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक प्रगति व सामाजिक उत्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान व इनमें गत दशक में हुए परिवर्तन का अध्ययन करना ही शोध का मुख्य ध्येय है।

अलवर जिला राजस्थान के पूर्वोत्तर भाग में स्थित है, यह प्राकृतिक सम्पदा की दृष्टि से काफी सम्पन्न जिला है एवं विकास की राह में लगातार अग्रसर है। गरीबी उन्मूलन, आय का समान वितरण, स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन, संचार, विद्युत, पेयजल जैसे आधारभूत क्षेत्रों में लगातार विकास न केवल वर्तमान बेहतर बनाता है। साथ ही साथ अच्छे भविष्य की नींव भी रखता है। विकास का अर्थ न्याययुक्त संवृद्धि है। बेहतर स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास व कल्याण द्वारा जीवन स्तर में सुधार होता है। मात्रात्मक पहलुओं के साथ ही गुणात्मक पहलू जैसे मानव संसाधन

विकास का स्तर, विकास के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण एवं सामाजिक भागीदारी भी आर्थिक विकास के प्रमुख पक्ष है। परन्तु वर्तमान में अध्ययन क्षेत्र विकास की अन्धाधुन्ध दौड़ में लगा हुआ है, जिससे पर्यावरणीय दुष्प्रभाव परिलक्षित होने लगे हैं। मई 2018 में आने वाला तूफान विकास के नकारात्मक पहलुओं को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त विकास के प्रमुख आयाम जैसे औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के द्वारा उत्पन्न समस्याओं ने अलवर जिले के भौगोलिक पर्यावरण को अत्यधिक प्रभावित किया है। उद्योगों के विकास से प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो गई है। कृषि एवं अत्यधिक खनन से सीधे मृदा एवं धरातल की गुणवत्ता पर ऋणात्मक प्रभाव परिलक्षित होने लगा है। लगातार जनसख्या में वृद्धि होने से आवास एवं पेयजल की समस्याएँ भयावह होती जा रही है।

इस पर्यावरणीय क्षरण का बहुत बड़ा कारण असंतुलित एवं अवैज्ञानिक औद्योगीकरण और शहरीकरण है, जो दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। पर्यावरणक्षरण की समस्या ने वायु मिट्टी, जल, वनस्पतियों और जीवों पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हुए खतरनाक अनुपात ग्रहण कर लिया है। यदि आने वाले समय मे इसे रोका नहीं गया तो दुष्प्रभाव बढ़ते जायेंगे। साथ ही असमान विकास ने अलवर जिले में आर्थिक एवं सामाजिक विषमताओं को बढ़ाया है।

अध्ययन क्षेत्र :–

अलवर जिला जो कि राजस्थान के सिंहद्वार के नाम से भी पहचाना जाता है. राजस्थान की राजधानी जयपुर, भारत की राजधानी दिल्ली के मध्य राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 8 पर अरावली पर्वतमाला की गोद में बसा हुआ है। राजस्थान राज्य के उत्तर–पूर्व में स्थित अलवर जिला $27^{\circ}4'$ से $28^{\circ}4'$ उत्तरी अक्षांश और $76^{\circ}7'$ से $77^{\circ}13'$ पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। दक्षिण से उत्तर तक जिले की लम्बाई लगभग 137 किमी. तथा पूर्व से पश्चिम तक लम्बाई लगभग 110 किमी. है। इसके उत्तर व उत्तर–पूर्व में हरियाणा राज्य का रेवाड़ी व गुडगांवां जिला य दक्षिण–पश्चिम में जयपुर जिला, दक्षिण में दौसा अवस्थित है।

अलवर जिला न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से अपितु भौगोलिक दृष्टि से भी अत्यधिक महत्व रखता है. प्राकृतिक बनावट के आधार पर अलवर को तीन भागों में बांटा जा सकता है– (1) मध्य पर्वतीय भाग (2) पूर्वी पहाड़ी (3) पश्चिमी रेतीला भाग।

राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित यह जिला अपनी सामाजिक, आर्थिक, भाषाई वेश–भूषा, खानपान, कृषि व्यवस्था, नदियों, झीलों, अरावली पर्वत श्रृंखला, खनिज आदि के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान रखता है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् पंचवर्षीय योजनाओं में इस क्षेत्र में अनेक विकास

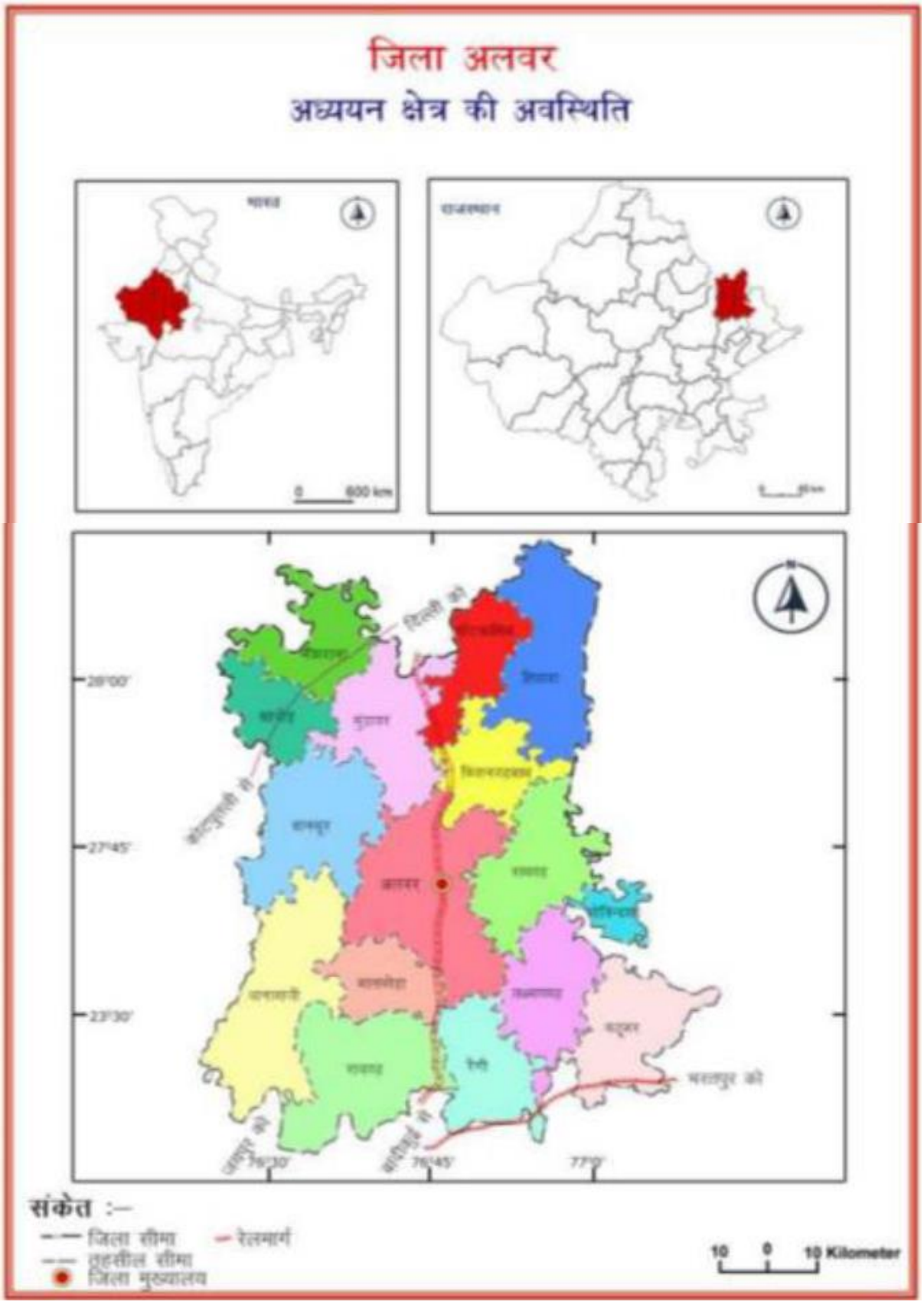

कार्यक्रम लागू किए गए हैं। हरित क्रांति के उपरान्त राज्य के सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में काफी परिवर्तन आया है परिणामस्वरूप पर्यावरण में भी परिवर्तन देखने को मिला है।

अध्ययन का उद्देश्य :–

अलवर में विकास की क्षेत्रीय विषमताओं से उत्पन्न भौगोलिक पर्यावरण पर प्रभाव एवं परिवर्तन का आंकलन एवं विश्लेषण करना ही शोध का मुख्य उद्देश्य है। इसके अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्न हैं

1. अलवर जिले में सामाजिक विकास स्तर का अध्ययन करना ।

2. आर्थिक एवं सामाजिक विकास के प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :–

सामान्यतया किसी तथ्य के संबंध में की गई मान्यता को परिकल्पना कहते हैं।जिनका परीक्षण विभिन्न सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया जाता है।

1. अलवर जिले के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में क्षेत्रीय विषमताएँ हैं।

शोध पद्धति :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त समकों का प्रयोग किया गया जिनके आधार पर समस्या का विश्लेषण कर सम्भावित शोध परिणाम निष्कर्ष एवं सुझाव देने का प्रयास किया गया है।

आंकड़ों के स्रोत :–

किसी भी प्रकार के अध्ययन के लिए आँकड़ों की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत अध्ययन में उपयोग हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़े एकत्रित किये गये हैं।

विकास की संकल्पना :–

विकास की संकल्पना से तात्पर्य जीवन के भौतिक स्तर में समग्र रचनात्मक परिवर्तन से है। सुधार के लिए रचनात्मक परिवर्तन में आर्थिक पक्ष के साथ–साथ सामाजिक पहलू भी सम्मिलित है। किसी भी क्षेत्र के भौगोलिक कारकों का वहाँ के सामाजिक और आर्थिक विकास से सीधा सम्बन्ध होता है। भौगोलिक कारकों यथा भू–आकृति धरातल, भू–गर्भ, जलवायु, वनस्पति, मिट्टी आदि कारकों का वहाँ के सामाजिक पहलुओं एवं आर्थिक संरचना पर प्रभाव पड़ता है मानव तथा वातावरण के सम्बन्धों का अध्ययन भूगोल में प्रारम्भ से होता आया है, जिसमें जनसंख्या एवं भौतिक तत्व भौगोलिक अध्ययन के समग्र रूप में आवश्यक तत्व रहे हैं। भौगोलिक पर्यावरण तो किसी क्षेत्र के विकास को प्रभावित करता ही है. साथ ही विकास भी भौगोलिक पर्यावरण को प्रभावित करता है।

विकास के पाँच आधारभूत तत्त्व हक (1977) ने प्रस्तुत किया।

1. मानव कल्याणकारी होना चाहिए।

2. विकास प्रक्रिया सम्बन्धी कार्य समाज को स्वीकार्य होना चाहिए।

3. समाज के सदस्य विकास कार्य में सक्रिय योगदान दें।

4. विकास में समाज की सम्पन्नता दिखाई देनी चाहिए।

5. स्वावलम्बी सामाजिक संगठन की स्थापना होनी चाहिए। सामान्यतः कुशल प्रबन्धन के अभाव में सामाजिक, आर्थिक विकास एवं पर्यावरण संरक्षण विरोधी संकल्पनाओं के रूप में देखे जाते हैं, लेकिन सतत् विकास के परिप्रेक्ष्य में दोनों के बीच सन्तुलन ही किसी इकाई क्षेत्र एवं उसकी जनसंख्या के दीर्घकालीन हितों की पूर्ति कर सकते हैं।

सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरण संरक्षण सम्बंधी अध्ययन एक अन्तर्विषयक उपागम हैं, जो किसी प्रदेश या क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरण के कई पक्षों के सह–सम्बन्धों को प्रकट करता है। किसी भी विकासशील देश के किसी प्रदेश या क्षेत्र में बढ़ती हुई संग्रहशीलता व कल्याणकारी कार्यों का मूल्यांकन करने के लिए उस प्रदेश के सामाजिक, आर्थिक एवं पर्यावरण परिवर्तन का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। शोध अध्ययन के लिए जिला अलवर का चयन किया गया। यह जिला राजस्थान के विकासशील जिलों में से एक है।

सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएं :–

1. सामाजिक परिवर्तन एक विश्वव्यापी प्रक्रिया है। अर्थात् सामाजिक परिवर्तन दुनिया के हर समाज में घटित होता है। दुनिया में ऐसा कोई भी समाज नजर नहीं आता, जो लम्बे समय तक स्थिर रहा हो या स्थिर है। यह संभव है कि परिवर्तन की रफ्तार कभी धीमी और कभी तीव्र होती है लेकिन परिवर्तन समाज में चलनेवाली अनवरत् क्रिया है।

2. सामुदायिक परिवर्तन ही वस्तुतः सामाजिक परिवर्तन है। इस कथन का मतलब है कि सामाजिक परिवर्तन का नाता किसी विशेष व्यक्ति या समूह के विशेष भाग तक नहीं होता है। वे ही परिवर्तन, सामाजिक परिवर्तन कहलाते हैं, जिनका प्रभाव समस्त समाज में अनुभव किया जाता है।

3. सामाजिक परिवर्तन के विविध स्वरूप होते हैं। प्रत्येक समाज में सहयोग, समायोजन, संघर्ष या प्रतियोगिता की प्रक्रियाएं चलती रहती हैं, जिनसे सामाजिक परिवर्तन विभिन्न रूपों में प्रकट होता है। परिवर्तन कभी एक रेखीय तो कभी बहुरेखीय होते हैं उसी तरह परिवर्तन कभी समस्यामूलक होता है तो कभी कल्याणकारी होता है।

4. सामाजिक परिवर्तन की गति असमान तथा सापेक्षिक होती है। समाज की विभिन्न इकाईयों के बीच परिवर्तन की गति समान नहीं होती।

सामाजिक परिवर्तन एवं समग्र विकास :–

सामाजिक परिवर्तन एवं समग्र विकास में सकारात्मक सम्बन्ध है समाज की संरचना में जैसे–जैसे परिवर्तन होगा, वैसे–वैसे ही परिवेश में बदलाव होगा। सामाजिक परिवर्तन से क्षेत्र में जीवन स्तर, रहन–सहन, तकनीकी विकास आदि में बढ़ोतरी होगी तथा इससे क्षेत्र में मूलभूत सुविधाओं का विकास होने के साथ ही उत्तम स्वास्थ्य एवं लम्बी जीवन प्रत्याशा के मानकों को प्राप्त किया जा सकेगा। मानव समाज का जीवन स्तर उस क्षेत्र के विकास का परिचालक होता है। मानव जीवन के विकास के लिए आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध होना बहुत आवश्यक है, क्योंकि बिना आधारभूत सुविधाओं के किसी भी क्षेत्र का समुचित विकास नहीं हो सकता। इन आधारभूत सुविधाओं में शैक्षणिक संस्थाएं स्वास्थ्य केन्द्र, परिवहन, संचार व्यवस्था, विद्युतीकरण एवं पर्यटन सुविधाएं शामिल हैं। जिले में उपलब्ध सुविधाओं एवं इन में 1971 से आए परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है।

सामाजिक परिवर्तन का स्तर :–

जिले में गत 1971 से 2011 तक इन पचास वर्षों में सामाजिक परिवर्तन की प्रवृत्ति का विश्लेषण करने के लिए निम्नलिखित दस चरों को सम्मिलित किया गया है ।

1. पेयजल सुविधा प्राप्त ग्राम

2. शिक्षा सुविधा प्राप्त ग्राम

3. चिकित्सा सुविधा प्राप्त ग्राम

4. संचार सुविधा प्राप्त ग्राम

5. परिवहन / यातायात के साधन सुविधा प्राप्त ग्राम

6. पक्की सड़क सुविधा प्राप्त ग्राम

7. विद्युत सुविधा प्राप्त ग्राम

8. बैंकिंग सुविधा प्राप्त ग्राम

9. सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन

10. कृषि विकास

अध्ययन क्षेत्र में मानव संसाधन :–

भूतल पर जनसंख्या के वितरण में आदिकाल से लेकर वर्तमान काल तक परिवर्तन होता रहा है। यद्यपि परिवर्तन की गति एवं दिशा देश काल के अनुसार भिन्न भिन्न रही है। जिले के विभिन्न भागों में जनसंख्या का वितरण अत्यधिक विषम है। जहाँ एक और मानव निवास के लिए उपयुक्त स्थल खण्डों पर अत्यधिक जनसंख्या का जमाव हो

गया है, वहीं दूसरी और बड़े बड़े भूखण्ड मनुष्य के लिए अनुपयुक्त होने के कारण पूर्णतया या आंशिक रूप से निर्जन है। जिले की स्थिति, औद्योगीकरण, यातायात मार्गो की सुगमता व सम्बन्धता के कारण जनसंख्या घनत्व व वितरण में भी वृद्धि देखी गई है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या पर स्थित औद्योगीकरण बहरोड, नीमराणा, शाहजहांपुर व भिवाड़ी में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

वर्ष 1971 से 2011 में अलवर जिले की जनसंख्या में वृद्धि हुई यह वृद्धि दर 161.73þ थी। वर्ष 1971 में जिले की जनसंख्या 140378 थी, जो बढ़कर 2011 में 36.74,179 हो गई। उपर्युक्त तालिका में तहसील वार जनसंख्या के वितरण को देखा जाये तो सर्वाधिक जनसंख्या अलवर तहसील में व न्यूनतम जनसंख्या कोटकासिम तहसील की है। विगत 40 वर्षो में सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि तिजारा तहसील में 286þ प्रतिशत हुई थी, इसका प्रमुख कारण भिवाडी औद्योगिक क्षेत्र है।

प्रथाएँ :–

कुछ विशेष कार्य जो प्राचीनकाल में किये जाते थे, वे ही कार्य परम्परागत मानकर वर्तमान में भी करना प्रथाएं कहलाती हैं। शिक्षा के प्रचार प्रसार एवं जन–जागरूकता के कारण धीरे–धीरे कुप्रथाएं बंद होती जा रही हैं। अलवर जिले की प्रमुख प्रथाएं निम्न हैं–

1. बाल विवाह :–

यह प्रथा धीरे–धीरे कम होती जा रही है। लेकिन गांवों में यह प्रथा आज भी जारी है। इस प्रथा के अंतर्गत बचपन में ही विवाह कर दिया जाता है, जिससे बाद में विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

2. पर्दा प्रथा :–

शिक्षा एवं जागरूकता के प्रसार के साथ–साथ यह प्रथा कम हो गई है। इसके अन्तर्गत घर की स्त्रियां, घर के बड़े बुजुर्ग एवं बाहरी व्यक्ति से पर्दा करती है। मुस्लिमों में भी यह प्रथा पाई जाती है।

3. गोद प्रथा :–

भारतीय संस्कृति में पुत्र प्राप्ति अनिवार्य मानी गई है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जब किसी व्यक्ति को पुत्र नहीं होता तो वह अपने वंश को आगे चलाने के लिए अपने परिवारजन या रिश्तेदार से किसी एक बच्चे को गोद में लेकर पुत्र स्वीकार करता है। वर्तमान में शिक्षा के प्रचार प्रसार से बेटी–बेटा को समरूप समझा जाने लगा है लेकिन गांवों में यह प्रथा आज भी विद्यमान है।

4. जनेऊ प्रथा :–

ब्राह्मण जाति में बच्चे के जनेऊ डालने की प्रथा है। जनेऊ सूत – के तीन धागों से बनी होती है तथा इसमें तीन गांठे शामिल होती हैं। जनेऊ प्रथा बच्चे के दस वर्ष पूरे होने पर की जाती है। यह प्रथा केवल बेटों के लिए होती है। आभूषण भारत में प्राचीन काल से पुरुष एवं विशेषतया स्त्री आभूषणों का प्रयोग – करते रहे हैं। प्राचीनकाल में विभिन्न जानवरों के सींग आदि को आभूषण के रूप में प्रयोग किया जाता था। समय के साथ आभूषणों की मूल धातु भी बदल गई। वर्तमान में सोने चांदी, हीरे के आभूषण बनाये जाते हैं एवं पहने जाते हैं।

5. पुरुष आभूषण :–

पुरुषों के आभूषणों के रूप में गले की चेन, हाथ घड़ी, गले में पहनने का लॉकिट, हाथ में पहनने का कड़ा प्रमुख है। अध्ययन क्षेत्र में मीणा जाति के लोग एक पाँव में चांदी का कड़ा पहनते हैं। उपरोक्त आभूषण सोने या चांदी के बने होते हैं। राजपूत जाति के पुरुष कान में गोल आकार का आभूषण पहनते हैं। जिसे मुरकी' कहा जाता है।

6. महिला आभूषण :–

महिलाओं के आभूषणों में मुख्यतया बालों व ललाट पर पहने जाने वाला टीका, नाक में पहने जाने वाली नथ तथा कान में पहनने की झुमकियां, हाथों में पहनने के हथ फूल तथा पांवों में पायल पहनी जाती है। अध्ययन क्षेत्र के मेव बहुल क्षेत्रों में गले में हसली पहनी जाती है। सामान्यतया महिलाएं गले में मंगलसूत्र एवं चेन भी पहनती हैं। उपरोक्त आभूषण सोने या चांदी के बने होते हैं।

पोशाक प्राचीनकाल में वस्त्र के रूप में पेड़ की छाल, पत्ती आदि का प्रयोग – किया जाता था। समय के साथ पोशाक का मूल पदार्थ भी बदल गया। वर्तमान में सभी पोशाकें कपड़े की होती हैं।

7. पुरुष पोशाक :–

साधारणतया जिले के पुरुषों की सभ्य वेशभूषा के रूप में पगड़ियाँ शिखराकार तथा आगे की ओर उठी हुई, घुटने के नीचे तक अंगरखिया तथा कंधे पर दुपट्टा मुख्य है। वर्तमान में कोट पेन्ट, कुर्ता–पायजामा, धोती भी पहनते हैं।

8. महिला वेशभूषा :–

अलवर जिले की महिलाओं की वेशभूषा बड़ी रंगीन एवं कलात्मक होती है। यहां ग्रामीण क्षेत्र में मुख्यतया घेरदार घाघरा तथा लुगड़ा या ओढ़नी ओढ़ती है। वर्तमान में साड़ी तथा लहंगा चौली भी पहनी जाती है ओढ़नी को चुन्दड़ी, पीला, कंगनिया आदि उसकी छपाई के आधार पर कहा जाता है। मुस्लिम स्त्रियां चूड़ीदार पायजामा तथा चुंदरी ओढ़ती हैं।

जिले में सामाजिक व सांस्कृतिक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। प्रतिदर्श सर्वेक्षण के आधार पर 1971 से 2017 के मध्य खान–पान, वेशभूषा, भाषा में परिवर्तन हो रहा है। वर्तमान में पाश्चात्यीकरण व नगरीकरण का प्रभाव अधिक देखने को मिल रहा है। अधिकांशतः जनसंख्या संचार व तकनीकी से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुयी है।

अलवर जिले में आर्थिक विकास में परिवर्तन :–

भारतीय कृषि में हरित क्रांति से कृषि उत्पादन में भारी वृद्धि हुई, उन्नतशील बीजों, रसायनिक खादों एवं नवीन तकनीकों के फलस्वरूप हुई। मुख्य तौर पर किसी भी कार्य क्षेत्र में कृषि तकनीकि का प्रभाव हरित क्रांति के बाद स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। सिंचाई सुविधा के विकास व आधुनिक साधनों के प्रयोग से सिंचाई गहनता में वृद्धि हुयी। कृषक निर्वाह खेती से हटकर व्यवसायियक खेती की ओर अग्रसित हुआ है। ऐसी स्थिति में स्थानीय कृषकों ने कृषि प्रतिरूप में परिवर्तन होने लगा है। खाद्य फसलों के साथ–साथ व्यवसायिक खेती भी करने लगा। जहॉ वर्ष में केवल एक ही फसल प्राप्त होती थी अब वह उन्नत तकनीकी के कारण दो या तीन फसलें भी ले रहा है। आधुनिक कृषि का दुष्परिणाम भी पर्यावरण अवनयन के रूप में सामने आ रहा है। इसके परिणामस्वरूप अलवर जिला भूमिगत जल की गिरावट के कारण डार्कजोन में परिवर्तित हो चुका है। साथ ही अत्यधिक उर्वरकों के प्रयोग से भूमिगत जल भी प्रदूषित हो रहा है।

अलवर जिले में औद्योगिक विकास एवं परिवर्तन :–

मानव एक जैविक एवं क्रियाशील प्राणी है। वह अपनी विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार की क्रियाएं करता रहता है। प्राचीनकाल में मानव की आवश्यकताएं कम थीं तथा भौतिकवादी युग नहीं था, तब मानव की क्रियाएं भी सीमित थीं। लेकिन धीरे–धीरे मानव की आवश्यकताएं बढ़ने लगी तथा मानव भौतिकवादी बनने लगा, तभी से मानव की क्रियाएं भी बढ़ गई।

मानव स्वयं के लिए एवं अपने परिवार के जीविकोपार्जन के लिए विभिन्न प्रकार की क्रियाएं करता है, जिसे आर्थिक क्रिया या व्यवसाय कहा जाता है। प्राकृतिक वातावरण के साथ सहयोग एवं समायोजन करके मानव आर्थिक क्रियाएं करता है। इसके फलतः मानव की आर्थिक क्रिया पर विभिन्न भौतिक एवं सांस्कृतिक तत्वों का प्रभाव पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप मानव की आर्थिक क्रियाओं में स्थानिक भिन्नता पायी जाती है। मानव की आर्थिक क्रियाओं में मुख्य रूप से खाद्य संग्रहण, आखेट, पशुचारण, मत्स्य पालन, लकड़ी काटना, कृषि, खनन, उद्योग, परिवहन, विभिन्न सेवाएं, व्यापार, वाणिज्य, सूचना, शोध प्रबंध कानूनी सलाहकार व तकनीकी सलाहकार आते हैं। इस प्रकार व्यवसाय मनुष्य की आय का स्थायी स्रोत है तथा इसी के द्वारा मनुष्य की सामाजिक स्थिति का निर्धारण किया जाता है।

मानव सभ्यता के प्रारम्भिक काल में आदिम मानव की आवश्यकताएं सीमित थी तथा वह उन्हीं वस्तुओं का उत्पादन, उतनी ही मात्रा में करता था, जितनी उसे स्वयं को आवश्यकता होती थी। उस समय राज्य या किसी प्रशासनिक संख्या के अभाव में व्यावसायिक जटिलता नहीं थी। पुरापाषाणकाल में प्रकृति प्रदत्त फलों. कन्दमूल तथा अन्य वस्तुओं का संग्रहण, आखेट, जलस्रोतों से मछली पकड़ना, पशुओं का शिकार करना आदि मनुष्य के प्रमुख व्यवसाय थे। इसके बाद मनुष्य ने पशुपालन प्रारम्भ किया। नवपाषाण के अन्त तक मनुष्य ने कृषि को प्रमुख आर्थिक क्रिया के रूप में अपना लिया। इस प्रकार समय के साथ–साथ मनुष्य की आवश्यकताएं बढ़ी तथा विभिन्न व्यवसायिक क्रियाएं बढ़ने से इनकी जटिलता बढ़ती गई।

मानव व्यवसाय का विकास एवं बदलती प्रकृति :–

मानव सभ्यता के विकास के साथ ही आर्थिक क्रियाएं प्रारम्भ हो गई तथा समय के साथ–साथ इनकी प्रकृति बदलती गई तथा विभिन्न आर्थिक क्रियाएं प्रारम्भ हो गई। 4000 ईसापूर्व से पहले के समय को प्रागैतिहासिक काल कहते हैं, क्योंकि इस समय के ऐतिहासिक साक्ष्यों का अभाव पाया जाता है। आदिकाल के प्रथम चरण को पाषाण काल कहते हैं क्योंकि इस समय मानव ने पत्थर के औजारों का प्रयोग किया था। इसके दो चरण थे–पुरापाषाणकाल और नव पाषाण काल। पाषाण काल के बाद क्रमशः ताम्र युग और कांस्य युग आया जिसमें क्रमशः तांबे और कांसे के औजार बनाये जाते

थे। कांस्य युग के बाद लौह युग आरम्भ हुआ, जिसमें लोहे के औजार बनाए जाते थे। इस प्रकार प्रागैतिहासिक काल के बाद क्रमशः प्राचीनकाल, मध्यकाल और आधुनिक काल आये। इस प्रकार मानवउत्तरोत्तर विकास होता गया। बढ़ती शिक्षा, व्यापार तथा सांस्कृतिक विकास के कारण बड़े–बड़े नगरों का विकास हुआ। व्यापार में वस्तुओं का विनिमय होता था । ग्रामीण क्षेत्रों से कृषि उत्पाद परिवहन के साधनों द्वारा नगरों में एवं नगरों से निर्मित माल ग्रामीण क्षेत्रों में आने लगा। ज्ञान–विज्ञान पर धार्मिक पर्दा डालने से वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास यथा अधिक नहीं हो सका। इसी काल में भारत में व्यवसायिक विकास, कृषि, कुटीर उद्योग तथा व्यापार का सर्वाधिक विकास हुआ।

निष्कर्ष :–

मानव एवं उसके पर्यावरण का पारस्परिक संबंध स्थिर न होकर अत्यधिक गतिशील होता है। इसके फलस्वरूप विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में होने वाली प्रगति का मानव एवं पर्यावरण के पारस्परिक सम्बन्धों पर भी व्यापक प्रभाव पड़ता है। सामाजिक एवं आर्थिक विकास वर्तमान समय की महती आवश्यकता है। विकास क्षेत्र में सभी जगह समान रूप से हो, यह भी आवश्यक है। विकास का लाभ सामाजिक क्षेत्र के हर वर्ग को मिले, यह भी आवश्यक है। जब विकास में प्रादेशिक असमानताऐं दृष्टिगोचर होती है, तब क्षेत्र का विकास अवरूद्ध हो जाता है। विकास के कारण पर्यावरण क्षरण लगातार बढ़ रहा है। अतः पर्यावरण अवनमन एवं क्षरण को किन विधियों के द्वारा रोका जा सकता है, या कम किया जा सकता है, का अध्ययन करना अपेक्षित है। अलवर जिले के असमान सामाजिक एवं आर्थिक विकास का भौतिक वातावरण पर प्रभाव एवं समस्याओं के निराकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत करने का प्रयास शोध कार्य के माध्यम से किया जाना प्रासंगिक प्रतीत होता है, जिससे विकास के साथ–साथ अनुकूल भौगोलिक वातावरण भी बना रहे, इस दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र में शोध का महत्त्व स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है।

सन्दर्भ सूची :–

1. डॉ. एम. रिजवी 2008 सांस्कृतिक भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
2. जगदीश सिंह और काशीनाथ सिंह 2010 आर्थिक भूगोल के मूलतत्त्व वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
3. डॉ. चांदना आर.सी. 2010 जनसंख्या भूगोल कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना ।
4. डॉ. नाथूरामका एल.एन. 2010 भारतीय अर्थव्यवस्था, कॉलेज बुक हाउस, जयपुर।
5. इपस्टेन टी.एस. (1964) इकोनोमिक डवलपमेंट एण्ड सोशल चेंज इन साउथ इंडिया, मनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस, यू.एस.ए.
6. गहलोत एस.वी. (1974) राजस्थान में सामाजिक जीवन का चित्रण" कॉलेज बुक हाउस, जयपुर
7. मिश्रा आर.एन (2002) ज्तपइंस सपमि ंदक िंइपजंज रीतु पब्लिकेशन, जयपुर
8. पुनिया संदीप (2016) शेखावाटी क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक स्वरूप का मूल्यांकन, पीएच.डी. थीसिस, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
9. खटीक, धर्मेन्द्र कुमार (2018) प्रतापगढ़ जिले का सामाजिक आर्थिक विकास – मूल्यांकन एवं नियोजन, पीएच.डी. थीसिस राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ।
10. श्री निवास एम. एन. (1975) आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, राजस्थान प्रकाशन, नई दिल्ली
11. जिला सांख्यिकी (1991) जिला अलवर जिला सांख्यिकी विभाग, अलवर
12. जिला सांख्यिकी (2001) जिला अलवर जिला सांख्यिकी विभाग, अलवर
13. जिला सांख्यिकी (2011) जिला अलवर जिला सांख्यिकी विभाग, अलवर
14. जिला सांख्यिकी (2013)
15. जिला अलवर जिला सांख्यिकी विभाग, अलवर
16. जिला जनगणना पुस्तिका (1991) जिला अलवर,
17. जनगणना निदेशालय, जयपुर जिला जनगणना पुस्तिका (2001) जिला अलवर, जनगणना निदेशालय, जयपुर
18. जिला जनगणना पुस्तिका (2011) जिला अलवर, जनगणना निदेशालय, जयपुर